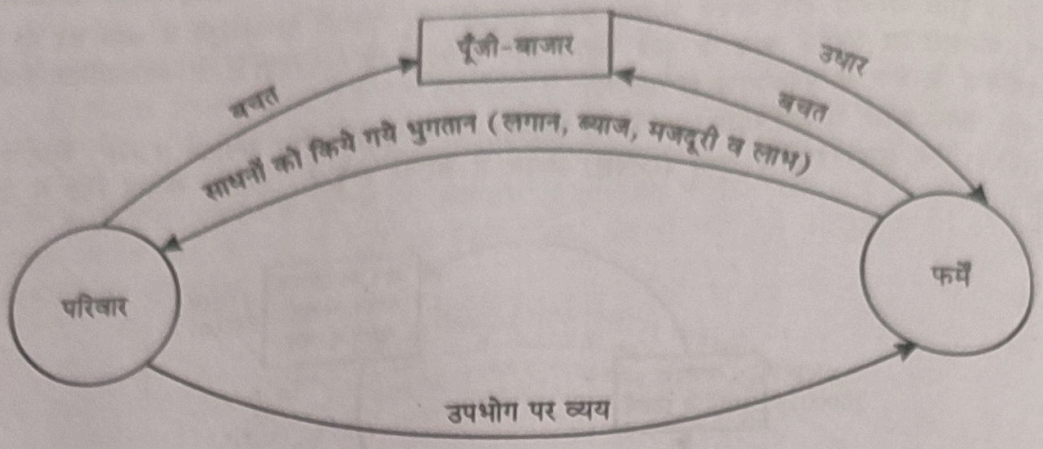

चित्र 4

एक स्वतन्त्र पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में विनियोग फर्मों व उद्यमों द्वारा किया जाता है। बचत अधिकांशत: गृहस्थों द्वारा की जाती है और कई कारणों से इस बात की कोई गारण्टी नहीं है कि विनियोग सदैव बचत के बराबर ही होगा। इसलिए यहाँ आय, उत्पादन और रोजगार में घट-बढ़ होना निश्चित है।

(1) मान लीजिए, **विनियोग** के लिए, लिये गये ऋण बचतों से कम हो जाते हैं अर्थात् (I < S)। ऐसी स्थिति में अर्थव्यवस्था में मुद्रा का प्रवाह कम हो जायेगा। अत: अन्तिम वस्तुओं की माँग कम हो जायेगी और कीमतें गिरेंगी।

(2) यदि **विनियोग बचतों** से अधिक (I > S) हो, यह तब हो सकता है जब मुद्रा के प्रवाह में भूतकाल में अपसंचित राशि आकर शामिल हो जाय या चलन में नई मुद्रा डाल दी जाय तो मुद्रा के प्रवाह में वृद्धि होगी, वस्तुओं की माँग बढ़ेगी और कीमतें बढ़ेंगी।

अत: मुद्रा प्रवाह के स्थिर अथवा अपरिवर्तित स्तर पर रहने की आवश्यक शर्त (Condition for the Steady or Constant Level of Income Flow) है कि विनियोग (Investment) बचत (Saving) के बराबर होनी चाहिए।

अत: **संतुलन की शर्त–**

इस प्रकार की अर्थव्यवस्था में सन्तुलन की निम्नलिखित शर्तें होंगी—

$$S = I \text{ अथवा } C + S = C + I$$

यहाँ, S = बचतें, I = निवेश

(iv) **त्रिक्षेत्रीय चक्रीय प्रवाह मॉडल** (Third Sector Circular Flow Model)—अब हम यह मान लेते हैं कि एक अर्थव्यवस्था में तीन क्षेत्र हैं—परिवार, फर्में और सरकार। इस मॉडल में सरकार के क्रियाकलाप भी आय के प्रवाह को प्रभावित करते हैं। सरकार के क्रियाकलापों को मुख्य रूप से दो भागों में बाँटा जा सकता है—सरकारी राजस्व और सरकारी आय।

(अ) सरकारी राजस्व (Government Revenue)—सरकार विभिन्न स्रोतों से आय प्राप्त करती है। सरकार की आय का प्रमुख स्रोत कर है। करों के दो प्रमुख स्वरूप हैं—**वैयक्तिक कर** (T_1) तथा **व्यावसायिक फर्मों पर कर** अर्थात् **निगम कर** (T_2)।

सरकार को करों द्वारा प्राप्त कुल आय को निम्न सूत्र द्वारा दर्शाया जा सकता है—

$$T = T_1 + T_2$$

(ब) सरकारी व्यय (Government Expenditure)—सरकार करों से प्राप्त आय को विभिन्न प्रकार से व्यय करती है जिन्हें चार भागों में बाँट सकते हैं—(i) **परिवार क्षेत्र** के लोग सरकारी प्रशासन, सेना आदि में जब सेवाएँ प्रदान करते हैं तो सरकार इन्हें प्रतिफल (G_1) प्रदान करती है। (ii) **फर्मों द्वारा** उत्पादित वस्तुओं को जब सरकार क्रय करती है, तब वह उत्पादकों को भुगतान (G_2) करती है। (iii) सरकार परिवार क्षेत्र को

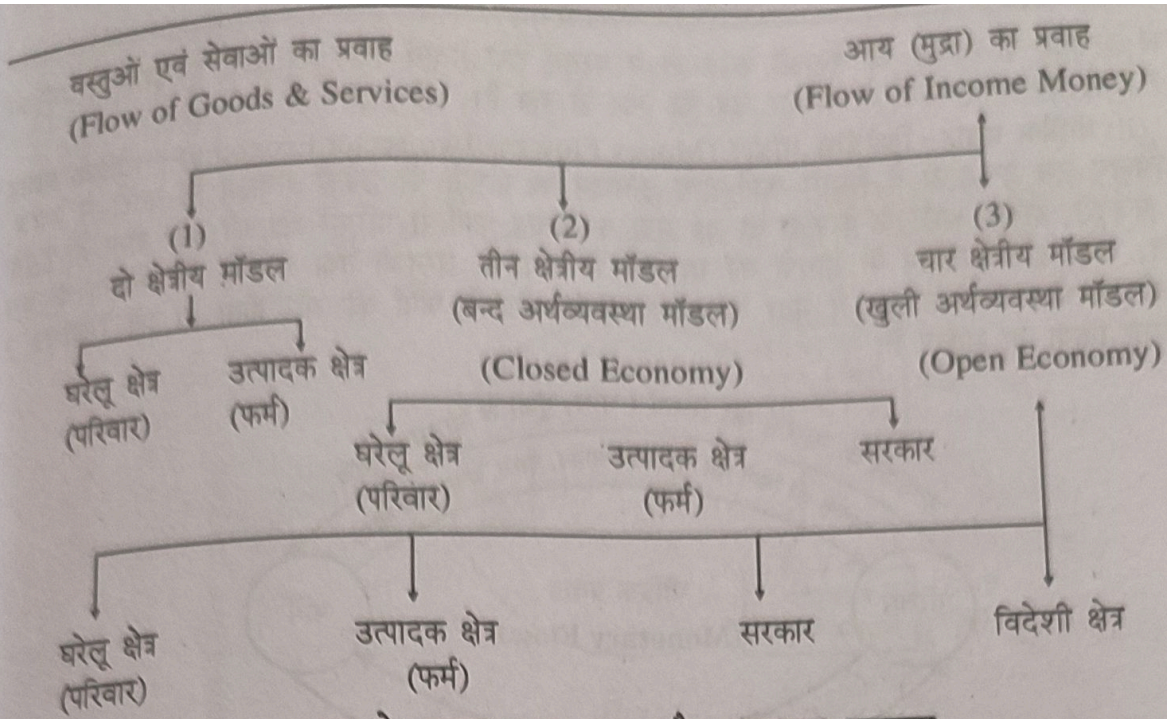

आय के प्रवाह का जन्म और बदलता स्वरूप
(ORIGIN OF INCOME FLOW AND ITS CHANGING NATURE)

आर्थिक विकास की प्रारम्भिक अवस्था में तो उत्पादन क्रिया सरल थी, पर धीरे-धीरे आर्थिक विकास के साथ-साथ जटिल श्रम विभाजन, वित्तीय संस्थाओं का विकास, राज्य के हस्तक्षेप तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की समस्याओं ने आर्थिक जटिलताओं में वृद्धि की है। विभिन्न उत्पादन साधनों के पारस्परिक सम्बन्धों ने आय के चक्राकार प्रवाह को जन्म दिया है। आय का उपार्जन सामान्यत: मुद्रा के रूप में होता है, अत: **आय प्रवाह** (Income Flow) और **मुद्रा प्रवाह** (Money Flow) एक ही है।

(i) **वास्तविक वस्तु प्रवाह** (Real Goods Flow)— वास्तविक वस्तु प्रवाह एक परम्परागत अर्थव्यवस्था में प्रचलित होता है। **वस्तु प्रवाह में वस्तुओं और सेवाओं का आपसी विनिमय होता है और मुद्रा का प्रयोग विनिमय में अनुपस्थित होता है।**

आय के **वास्तविक प्रवाह** से अभिप्राय यह है कि परिवार क्षेत्र द्वारा प्रदान की गई उत्पादन के साधनों की सेवाओं का प्रवाह फर्मों या उत्पादक क्षेत्र की ओर होता है तथा फर्मों द्वारा उत्पादित वस्तुओं का प्रवाह परिवार क्षेत्र की ओर होता है। आय के **वास्तविक प्रवाह** को रेखाचित्र 1 द्वारा स्पष्ट किया गया है।

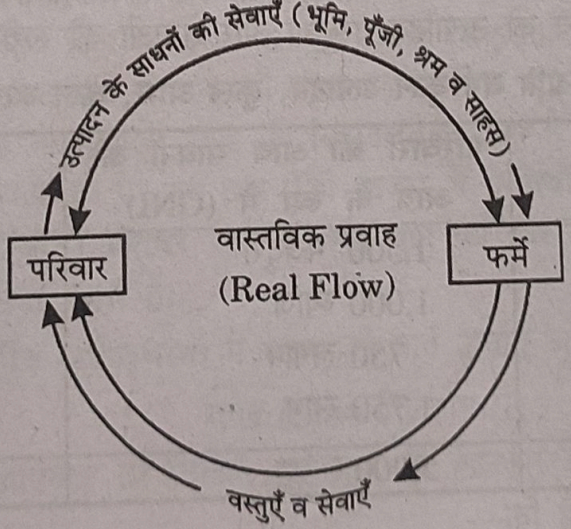

चित्र 1

चित्र 1 से ज्ञात होता है कि परिवार क्षेत्र द्वारा फर्मों को उत्पादन के साधनों की सेवाएँ; जैसे—श्रम, पूँजी, उद्यम, भूमि प्रदान की जाती हैं। इसलिए उत्पादन के साधनों का प्रवाह **परिवार क्षेत्र से फर्मों की ओर हो रहा है।** इन साधनों की सहायता से फर्में वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन करती हैं। फर्मों द्वारा परिवार

आय के चक्राकार प्रवाह की अवधारणा
(CONCEPT OF CIRCULAR FLOW OF INCOME)

उत्पादन के विभिन्न साधनों के पारस्परिक सहयोग से उत्पादन कार्य सम्पन्न होता है। उत्पादन में संलग्न व्यक्तियों को उत्पादन साधनों के स्वामियों के रूप में प्रतिफल प्राप्त होता है; जैसे—भूमि का लगान, श्रम की मजदूरी या वेतन, पूँजी का ब्याज और साहसी को लाभ। दूसरी ओर, व्यावसायिक फर्में इन उत्पादन साधनों के प्रयोग से वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन करती हैं।

उत्पादन साधनों के स्वामी केवल साधन पूर्तिकर्ता ही नहीं वरन् ये साथ-साथ उपभोक्ता भी हैं। अत: वे साधनों से अर्जित आय को उपभोग पर व्यय करते हैं। इससे व्यावसायिक फर्मों को वस्तुओं और सेवाओं की बिक्री से आय प्राप्त होती है जिसको वे पुन: वस्तुओं और सेवाओं के पुनरुत्पादन के लिए उत्पादन साधनों पर व्यय करते हैं।

इस प्रकार आय प्रवाह चक्रीय होता है। **उत्पादन प्रक्रिया के अन्तर्गत वस्तुओं तथा सेवाओं के प्रवाह के फलस्वरूप साधन आय का सृजन होता है।** उत्पादन आय को, आय व्यय को, फिर वह व्यय उत्पादन को और उत्पादन आय को जन्म देता है। इस प्रकार उत्पादन प्रक्रिया के अन्तर्गत सृजित आय की व्याख्या आय के चक्रीय प्रवाह के रूप में की जा सकती है। इस प्रकार यह चक्र चलता रहता है; जैसे :

उत्पादन ⟶ आय ⟶ व्यय ⟶ उत्पादन ⟶ आय

Production ⟶ Income ⟶ Expenditure ⟶ Production ⟶ Income

आय के चक्रीय प्रवाह का सिद्धान्त (अथवा कारण)
(PRINCIPLES OR REASONS OF CIRCULAR FLOW OF INCOME)

आय का चक्रीय प्रवाह निम्नलिखित दो सिद्धान्तों (अथवा कारणों) पर आधारित है—

(1) किसी भी विनिमय प्रक्रिया में विक्रेता अथवा उत्पादक उतनी ही मुद्रा की मात्रा प्राप्त करता है जितनी क्रेता या उपभोक्ता व्यय करता है अर्थात् क्रेताओं द्वारा खर्च की गई राशि विक्रेताओं द्वारा प्राप्त की गई राशि के बराबर होती है।

(2) वस्तुएँ तथा सेवाएँ विक्रेताओं से क्रेताओं की ओर एक दिशा में प्रवाहित होती है जबकि इन वस्तुओं और सेवाओं के लिये मौद्रिक भुगतान विपरीत दिशा में अर्थात् क्रेता से विक्रेता की ओर प्रवाहित होता है।

आय के प्रवाहों के विभिन्न स्वरूपों को नीचे चार्ट द्वारा दर्शाया गया है—

विभिन्न क्षेत्रों में आय का चक्रीय प्रवाह
(CIRCULAR FLOW OF INCOME IN VARIOUS SECTORS)